

डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 3, उपयोगितावाद

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3 है, उपयोगितावाद।

ठीक है, तो चलिए प्रमुख नैतिक सिद्धांतों का अपना सर्वेक्षण शुरू करते हैं, और हम उपयोगितावाद से शुरू करेंगे।

उपयोगितावादी विचार के इतिहास की बात करें तो दो सबसे प्रमुख दार्शनिक जेरेमी बेंथम और जॉन स्टुअर्ट मिल हैं। बेंथम वास्तव में आधुनिक उपयोगितावादी विचार के संस्थापक थे, और जॉन स्टुअर्ट मिल, जिनके पिता जेरेमी बेंथम के अच्छे दोस्त थे। संभवतः मिल ही सबसे प्रसिद्ध विद्वान हैं जिन्होंने उपयोगितावाद का बचाव किया।

यह एक ऐसा सिद्धांत है जो प्राचीन दार्शनिक एपिक्यूरस से जुड़ा है, जो एक तरह के सुखवादी थे। सुखवाद वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार मनुष्य के लिए सबसे अच्छा आनंद है और हमें अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी अधिकतम आनंद प्राप्त करना चाहिए। सुखवाद का उपयोगितावादी ब्रांड, जिसे सबसे पहले बेंथम ने विकसित किया था, इस केंद्रीय दावे की पुष्टि करता है कि खुशी, मानवीय खुशी, सबसे सुखद जीवन है।

इसलिए, एपिक्यूरस की तरह, बेंथम ने सोचा कि नैतिकता के लिए सबसे अच्छा तरीका यह पहचानना है कि आनंद ही नैतिक मानक है। यह एक वस्तुगत तथ्य है। हम ऐसी चीजों का अनुभव करते हैं जो सुखद और दर्दनाक होती हैं।

हम कई तरह के सुखों के साथ-साथ दुखों का भी अनुभव करते हैं। चूंकि यह ऐसी चीज़ है जिसकी सार्वभौमिक इच्छा होती है, इसलिए हर कोई सुख चाहता है और एक सुखद जीवन जीना चाहता है, और यह नैतिकता के लिए एक आशाजनक मानक प्रतीत होता है। क्या होगा अगर हर कोई अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख प्राप्त करने का लक्ष्य रखता है? क्या इससे ज़्यादातर लोगों के लिए सबसे ज़्यादा खुशहाल जीवन नहीं होगा? यही उपयोगितावाद का मूल अंतर्ज्ञान है।

शास्त्रीय उपयोगितावाद, जैसा कि इसे अक्सर कहा जाता है, या कार्य उपयोगितावाद, इस मानक को प्रत्येक व्यक्तिगत कार्य या नीति पर लागू करता है जिसे हम समर्थन या अनुसरण करने पर विचार कर सकते हैं। तो, यह वह दावा है जो जेरेमी बेंथम करता है कि हमें प्रत्येक क्रिया का मूल्यांकन उसके द्वारा उपयोगिता के सिद्धांत के अनुसार करना चाहिए, जिसके बारे में वह कहता है कि यह वह सिद्धांत है जो प्रत्येक क्रिया को उसकी प्रवृत्ति के अनुसार स्वीकृत या अस्वीकृत करता है जो खुशी को बढ़ाने या कम करने के लिए प्रतीत होती है। तो यह एक बुनियादी विचार है।

उपयोगितावादी सिद्धांत की एक बड़ी खूबी यह है कि इसे समझना आसान है। यह एक बहुत ही आसानी से समझ में आने वाला सिद्धांत है। हम कुछ अन्य सिद्धांतों पर नज़र डालेंगे, जैसे कांट, सद्गुण नैतिकता, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत, प्राकृतिक कानून, इत्यादि, जिनमें कुछ और चुनौतीपूर्ण अवधारणाएँ हो सकती हैं।

ज़्यादा सरल क्या हो सकता है ? इस तरह से कार्य करें कि आनंद और खुशी को बढ़ावा मिले, है न? उन चीज़ों से बचने की कोशिश करें जो दर्दनाक हैं और दूसरों को दर्द पहुँचाने से बचने की कोशिश करें। यहाँ यही मूल विचार है। अब, बेंथम के उपयोगितावाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह सभी के लिए समान विचार की पुष्टि करता है।

किसी भी व्यक्ति, किसी भी प्राणी, सिर्फ़ मनुष्य ही नहीं, बल्कि किसी भी संवेदनशील प्राणी को जो सुख और दुख का अनुभव कर सकता है, उचित विचार दिया जाना चाहिए, है न? और किसी भी मनुष्य का सुख या दुख किसी और के सुख या दुख से ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए, यहाँ एक बहुत ही समतावादी तरह की प्रतिबद्धता है। और यह हममें से बहुतों को आकर्षित भी करती है।

अब, बेंथम के उपयोगितावाद को एपिक्यूरस के प्राचीन सुखवाद से अलग करने वाली बात यह है कि उन्होंने सुख-दुख की गणना विकसित की। अब, वे आधुनिक, आरंभिक आधुनिक काल में रह रहे हैं, जहाँ विज्ञान आगे बढ़ रहा है, और वैज्ञानिक हमारी दुनिया को समझने के लिए गणित की उपयोगिता की खोज कर रहे हैं, है न? अब, बेंथम ने फैसला किया कि नैतिकता के बारे में सोचने के मामले में यह बहुत मददगार हो सकता है। और आइए इसे यथासंभव वैज्ञानिक बनाएँ।

इसलिए उन्होंने सुख-दुख की गणना विकसित की, जो प्रत्येक क्रिया के सुख या दुख का मूल्यांकन कई मानदंडों के अनुसार करती है। और उनमें से सात हैं। उनमें से एक तीव्रता है, जहाँ हम पूछते हैं कि संवेदना कितनी प्रबल है। दर्द या सुख कितना तीव्र है? अवधि: सुख या दुख कितने समय तक रहता है? निश्चितता: इस बात की कितनी संभावना है कि क्रिया करने से दुख या सुख उत्पन्न होगा? निकटता एक ऐसा शब्द है जिसे हम बहुत कम सुनते हैं, लेकिन इसका संबंध इस बात से है कि सुख या दुख कितने समय के बाद होगा।

यह कितनी जल्दी होगा? प्रजनन क्षमता एक और असामान्य शब्द है जिसका संबंध सिर्फ़ इस बात से है कि इस मामले में, सुख या दर्द दूसरे तरह के सुख या दर्द को जन्म देगा या फिर यह कार्य दूसरे तरह के सुख और दर्द को जन्म देगा। पवित्रता, चाहे सुख हो या दर्द, विपरीत संवेदना के साथ मिश्रित होती है। क्या यह ज़्यादातर सुखद होगा लेकिन कुछ हद तक दर्दनाक भी होगा, या इसके विपरीत? या यह पूरी तरह से सुखद होगा या पूरी तरह से दर्दनाक? फिर, समस्या की सीमा उन लोगों की संख्या से संबंधित है जो प्रभावित होंगे।

बेंथम का मानना था कि जब आप यह विचार कर रहे हों कि कोई खास कदम उठाना सही है या नहीं, तो आप इनमें से हर श्रेणी को सकारात्मक या नकारात्मक संख्यात्मक मान दे सकते हैं।

मान लीजिए मुझे अपनी कक्षा के लिए एक किताब की ज़रूरत है। मैं अभी इसे खरीदने में सक्षम नहीं हूँ, इसलिए मैं अपने पड़ोसी की किताब चुराने के बारे में सोच रहा हूँ।

यह 70 या 80 डॉलर का टेक्स्ट है। क्या ऐसा करना उचित होगा? खैर, मेरे लिए, यह थोड़ी खुशी देने वाला है। उम्मीद है कि मेरी अंतरात्मा इतनी बुरी होगी कि यह मुझे बुरी तरह परेशान करेगी।

यह दर्दनाक है। यह निश्चित रूप से किसी और के लिए दर्द का कारण बनेगा जो एक निश्चित अवधि तक रहेगा। यह निश्चित है कि वे उस दर्द को तुरंत महसूस करेंगे और फिर कुछ हद तक, लंबे समय तक भी महसूस करेंगे।

भले ही वे कई दिनों तक इस बात से उबर जाएं, लेकिन यह उन्हें परेशान करेगा। यह संभवतः अन्य पीड़ाओं को जन्म देगा। जब दूसरे लोगों को पता चलेगा कि उस व्यक्ति की किताब चोरी हो गई है, तो यह उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से परेशान करेगा।

उम्मीद है कि मेरी खुशी भी मिली-जुली होगी, अगर मेरे पास विवेक है, तो कुछ हद तक दर्द भी होगा, यह जानते हुए कि इससे बहुत से लोगों को परेशानी हुई। सातवां मानदंड किस हद तक लागू होता है, यह महत्वपूर्ण है। लोगों को इसके बारे में पता चल जाएगा।

यह स्पष्ट होना चाहिए कि मुझे इस व्यक्ति की किताब नहीं चुरानी चाहिए। इससे बहुत से लोगों को मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत दर्द और परेशानी होगी। इससे मुझे कोई खास खुशी नहीं मिलेगी।

मुझे शायद किताब खरीद लेनी चाहिए या उधार ले लेना चाहिए, लाइब्रेरी या किसी और जगह से इसे जांचना चाहिए। यह एक बहुत ही आसान मामला है, लेकिन वही सुख-दुख की गणना बहुत अधिक चुनौतीपूर्ण नैतिक मुद्दों पर लागू की जा सकती है। यहीं पर बेंथम को लगता है कि नैतिक सत्य की खोज के लिए यह वास्तव में सबसे आशाजनक मार्ग है।

फिर से, हम सुख और दुख को मापने और समग्र खुशी का निर्धारण करने के लिए इस गणना की उपयोगिता की प्रयोज्यता के संदर्भ में समतावादी बात पर वापस जाते हैं। हम इसे जानवरों पर भी लागू कर सकते हैं, जो, बेंथम के दिनों में, बहुत से लोगों के लिए बहुत दिलचस्प या चिंता का विषय नहीं रहे होंगे। लेकिन आज हम में से जो लोग मानते हैं, वे मानते हैं कि पशु कल्याण एक महत्वपूर्ण बात है।

जिस किसी के पास पालतू जानवर है, वह जानता है कि बिल्ली, कुत्ता, बकरी, मुर्गी या गाय दर्द महसूस करते हैं; वे दर्द और खुशी का अनुभव करते हैं, और इसलिए वे एक निश्चित सम्मान के हकदार हैं। अब, एक ईसाई धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण और एक बाइबिल दृष्टिकोण से, हम जानते हैं कि केवल मनुष्य ही ईश्वर की छवि में बने हैं। इसलिए, एक जानवर का मूल्य मनुष्यों की तुलना में बहुत कम है, लेकिन फिर भी वे मूल्यवान हैं, और उनका दर्द और उनका आनंद मायने रखता है।

इसलिए, उपयोगितावादी सिद्धांत की एक खूबी या ताकत यह है कि इसमें जानवरों और उनके दर्द और खुशी पर विचार करने और यह पहचानने के लिए जगह है कि हमें उनके लिए किसी

तरह का नैतिक सम्मान रखने की ज़रूरत है। इसलिए कई लोग बेंथम को आज के पशु अधिकार आंदोलन या पशु कल्याण आंदोलन के ऐतिहासिक मूल के रूप में देखते हैं। जानवरों की बात करें तो उपयोगितावादी सिद्धांत की एक बड़ी आलोचना यह है कि यह सूअर के योग्य सिद्धांत है।

यह मानना कि मनुष्य के लिए आनंद से बढ़कर कोई और अच्छाई नहीं है, हमें उसी स्तर पर रखता है, जैसे कि सूअर, जिसके जीवन के सुखों में खाना, संभोग करना और कीचड़ में लोटना शामिल है। सूअरों को क्या आनंद मिलता है? आप जानते हैं, यह ऐसे ही क्रूर सुख हैं। निश्चित रूप से, मनुष्य जानवरों से उच्च स्तर पर हैं, और दार्शनिक आमतौर पर इसे पहचानते हैं।

लेकिन मानव भलाई को सिर्फ आनंद के मामले के रूप में पहचानना, बेंथम के दिनों और मिल के दिनों में कई लोगों ने तर्क दिया कि यह वास्तव में मानव जाति के लिए अपमानजनक है। इसलिए जॉन स्टुअर्ट मिल, जो उपयोगितावादी सिद्धांत के प्रमुख दार्शनिक प्रस्तावक के रूप में बेंथम के उत्तराधिकारी थे, ने इस आपत्ति की आलोचना की या इसका जवाब देते हुए कहा कि आलोचना स्वयं मानव प्रकृति को अपमानजनक प्रकाश में प्रस्तुत करती है क्योंकि यह मानती है, जैसा कि उन्होंने कहा, कि मनुष्य उन सुखों को छोड़कर किसी भी सुख के लिए सक्षम नहीं है, जो सूअरों के लिए सक्षम हैं। लेकिन तथ्य यह है कि मनुष्य के पास उच्च सुख हैं, गुणात्मक रूप से बेहतर सुख।

क्यों? क्योंकि हमारे पास उच्च क्षमताएँ हैं। हमारे पास संज्ञानात्मक क्षमताएँ हैं जो सूअरों में नहीं हैं, जो अन्य स्तनधारियों में नहीं हैं। हमारे पास भावनात्मक क्षमताएँ और संबंधपरक क्षमताएँ हैं जो इन जानवरों में नहीं हैं।

और इसे किसी तरह इस सिद्धांत में शामिल किया जाना चाहिए। और इसलिए मिल ने उस बात का बचाव किया जिसे तब से गुणात्मक सुखवाद कहा जाता है, जो कि सिद्धांत के बेंथम संस्करण से आगे की बात है। हमारे पास अन्य प्रकार के सुख हैं, न केवल संवेदना के सुख, बल्कि बुद्धि और भावना और कल्पना के सुख और यहां तक कि नैतिक सुख भी।

न्याय होते देखकर हमें एक तरह की खुशी और संतुष्टि मिलती है। कोई भी कुत्ता ऐसा अनुभव नहीं करता। कोई भी कुत्ता शतरंज के खेल का आनंद नहीं लेता।

मुझे शतरंज का खेल बहुत पसंद है। मुझे सेटलर्स ऑफ़ कैटन या पोकर जैसे कुछ अन्य खेल भी पसंद हैं। ये बौद्धिक सुख हैं, किताब पढ़ने और अच्छी फ़िल्म देखने का बौद्धिक सुख।

मेरा कुत्ता ऑस्टिन जितना भी बुद्धिमान हो, वह शतरंज या बोर्ड गेम या पोकर का आनंद नहीं ले सकता। इसलिए, ये ऐसे उच्च सुख हैं जो मनुष्यों के पास जानवरों की तुलना में हैं। इससे यह सवाल उठता है कि आप कैसे जानते हैं कि कौन से सुख गुणात्मक रूप से अन्य सुखों से बेहतर हैं। मिल का गुणात्मक परीक्षण यह है कि, जैसा कि वह कहते हैं, दो सुखों में से, यदि ऐसा कोई सुख है जिसे सभी या लगभग सभी लोग, जिन्हें दोनों का अनुभव है, एक निश्चित वरीयता देते हैं, चाहे उसे वरीयता देने के लिए किसी भी नैतिक दायित्व की भावना हो, तो वह अधिक वांछनीय सुख है।

तो, इस तरह हम तय कर सकते हैं कि कौन सा सुख दूसरों से बेहतर या श्रेष्ठ है। अगर आप मुझसे पूछें कि श्रेष्ठ सुख क्या है, दोस्तोवस्की की किताब पढ़ने का सुख या स्पेगेटी की एक प्लेट खाने का सुख, जैसे कि मेरी पत्नी की स्पेगेटी, तो इसकी तुलना ब्रदर्स करमाज़ोव को पढ़ने से मिलने वाले सुख से नहीं की जा सकती। यह एक उच्च सुख है।

कविता पढ़ना वीडियो गेम खेलने के बजाय बेहतर है। इस पर छात्रों की ओर से मुझे बहुत विरोध का सामना करना पड़ता है। लेकिन मैं कहूंगा कि उच्च आनंद, यह मानते हुए कि कविता उत्कृष्ट है, जॉन डॉन या विलियम शेक्सपियर की कविता, ग्रैंड थेफ्ट ऑटो या किसी वीडियो गेम को खेलने से मिलने वाले आनंद से बेहतर आनंद होगा।

इसलिए जिन लोगों ने दोनों तरह के सुखों का अनुभव किया है, वे लगातार ये जवाब देंगे। मिल कहते हैं कि इसी तरह आप जान सकते हैं कि कौन सा सुख सबसे अच्छा है। इसलिए, इसी कारण से मिल कहते हैं, जैसा कि वे कहते हैं, संतुष्ट सूअर की तुलना में असंतुष्ट इंसान होना बेहतर है।

संतुष्ट मूर्ख की अपेक्षा असंतुष्ट सुकरात होना बेहतर है। और अगर मूर्ख या सुअर की राय अलग है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि वे केवल अपने पक्ष को ही जानते हैं। मानवीय अनुभव के संबंध में कई कारक हैं, जैसे हमारी बुद्धि और हमारी भावनाएँ, और जब हम बुरा महसूस कर रहे होते हैं, तब भी यह गुणात्मक रूप से बेहतर स्थिति होती है, क्योंकि हमारे पास ये उच्च क्षमताएँ होती हैं।

अब, कुछ हलकों में मनुष्य की श्रेष्ठता के बारे में यह दावा करना बहस का विषय या विवादास्पद भी हो सकता है। यह मिल का दृष्टिकोण था। लेकिन यहाँ उनका मुख्य बिंदु यह है कि कुछ प्रकार के सुख ऐसे हैं जो सिर्फ अपनी गुणवत्ता के कारण श्रेष्ठ हैं।

अब, यहाँ कुछ लोगों द्वारा की गई आपत्ति यह है कि, उन लोगों के बारे में क्या कहा जाए जो उच्च सुखों के लिए धन्यवाद नहीं कहते और फिर निम्न सुखों की तलाश करते हैं? आप उन लोगों के बारे में क्या कहेंगे जो अपना सारा समय वीडियो गेम खेलने में बिताते हैं और किताबें बिल्कुल नहीं पढ़ते? उन्हें अच्छी फिल्मों में भी कोई दिलचस्पी नहीं है। या ऐसे लोग जो सिर्फ जंक फूड खाते हैं और बढ़िया खाने के लिए धन्यवाद नहीं कहते। कोई दिलचस्पी नहीं।

मैं फिर से अपना फास्ट-फूड बर्गर और फ्राइज़ खाना पसंद करूंगा। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जो उच्च सुखों के बजाय निम्न सुखों को प्राथमिकता देते हैं। मिल का इस बारे में क्या कहना है? उनका कहना है कि यह चरित्र की एक निश्चित दुर्बलता को दर्शाता है।

उच्च सुखों का आनंद लेने की क्षमता का नुकसान या कम से कम उच्च सुखों की सराहना करने की क्षमता का नुकसान, निम्न सुखों की लत के कारण। सोडा, फास्ट फूड, आलू के चिप्स, कैन्डी बार, सभी प्रकार के मीठे खाद्य पदार्थों के आदी होना संभव है। मैं कभी-कभी किराने की दुकान पर लोगों को भारी मात्रा में माउंटेन ड्यू और सभी प्रकार के चिप्स और पनीर बॉल्स और न जाने क्या-क्या खरीदते हुए देखता हूँ और कहता हूँ वाह, वे वास्तव में इस अस्वास्थ्यकर भोजन के आदी हैं।

मिल कहते हैं कि यह चरित्र की कमजोरी है। यह मानव स्वभाव है। हम सभी तरह की लतों के शिकार होते हैं।

इस मामले में समस्या हमारे साथ है। यह उनके सिद्धांत या उनके दृष्टिकोण के साथ कोई समस्या नहीं है। वास्तव में, उच्च सुख को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, और यदि हम इन निम्न सुखों को प्राथमिकता देते हैं, तो समस्या हमारे साथ है, उनके सिद्धांत के साथ नहीं।

उनके पास संतुष्ट जीवन और वास्तव में खुश व्यक्ति होने का क्या मतलब है, इस बारे में कुछ बातें हैं। संतुष्ट जीवन के दो मुख्य घटक हैं उत्साह और शांति। एक खुशहाल जीवन, एक संतुलित, खुशहाल जीवन, वह होगा जो ज्यादातर शांति, आप जानते हैं, हमारे जीवन में शांति और सद्भाव के साथ-साथ उत्साह के कभी-कभी अनुभवों से युक्त होगा।

आप अपने जीवन में बहुत ज़्यादा उत्साह नहीं चाहते। आपका केंद्रीय तंत्रिका तंत्र इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। आप ज़्यादातर शांति, कम से कम दर्द और फिर उत्साह के दौर चाहते हैं।

वे कहते हैं कि असंतुष्ट जीवन के दो मुख्य कारण हैं स्वार्थ और मानसिक साधना का अभाव। यह एक दिलचस्प विश्लेषण है। वे कहते हैं कि ज़्यादातर मामलों में या कई मामलों में असंतुष्ट लोगों के साथ समस्या यह है कि वे स्वार्थी हैं।

वे दूसरों की ज़रूरतों पर उतना ध्यान नहीं दे रहे हैं जितना उन्हें देना चाहिए, और उन्होंने खुद को संज्ञानात्मक रूप से विकसित नहीं किया है। उन्होंने अपने दिमाग को उतना विकसित नहीं किया है जितना उन्हें करना चाहिए। अगर आप ये दोनों काम कर रहे हैं, तो आप निश्चित रूप से बोर नहीं होंगे, और आपको अपने जीवन में संतुष्टि मिलेगी।

उनका कहना है कि एक सुसंस्कृत मन, एक मन जिसे अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सिखाया जाता है, अपने आस-पास की हर चीज़ में अटूट रुचि के स्रोत खोज लेता है। और क्या यह सच नहीं है? जो लोग अच्छी तरह से पढ़े-लिखे हैं और सभी तरह के विषयों के बारे में बहुत जानकार हैं, वे अपने दैनिक जीवन और अनुभवों में उन लोगों की तुलना में अधिक उत्तेजना पाएंगे जो नहीं हैं। यदि आपकी अधिक रुचियाँ हैं, तो आपके ऊबने की संभावना बहुत कम है।

और यह आपको अन्य लोगों के लिए अधिक सहायक बनाता है। उनका कहना है कि दुनिया के बारे में महत्वपूर्ण चिंतन के लिए पर्याप्त मानसिक संस्कृति की एक निश्चित मात्रा सभ्य देश में पैदा होने वाले हर व्यक्ति की विरासत होनी चाहिए। इसलिए, वह लोगों को अधिक खुश और संतुष्ट बनाने के लिए शिक्षा के महत्व पर बहुत जोर देंगे।

उनका मानना है कि मानसिक संस्कृति सामाजिक बुराइयों का इलाज है। मिल को पूरा भरोसा था, जैसा कि आधुनिक काल के कई विद्वानों को था, कि अंततः हम गरीबी की समस्या को हल कर सकते हैं। हम सभी बीमारियों को खत्म कर सकते हैं।

ये दो मुख्य समस्याएँ हैं जिनका सामना यह कंपनी कर रही है। उनका कहना है कि समाज की समझदारी और व्यक्तियों की समझदारी और विवेक से गरीबी को पूरी तरह से खत्म किया जा

सकता है। चिकित्सा और वैज्ञानिक तकनीक के विकास से अंततः बीमारी पर भी विजय पाई जा सकती है।

यह ध्यान देने योग्य एक दिलचस्प बात है, क्योंकि मिल के दिनों से, ऐसा लगता है कि हमने, ठीक है, हमने कम से कम सैकड़ों बीमारियों की पहचान की है, आप जानते हैं, मिल के दिनों में जितनी बीमारियों के बारे में पता था। अब हम जानते हैं कि वायरस जिस तरह से काम करते हैं और उत्परिवर्तित होते हैं, उसके कारण वायरल संक्रमण और वायरल रोग साल दर साल बढ़ते हैं। इसलिए मुझे आश्चर्य है कि अगर मिल को महामारी विज्ञान के बारे में वह सब पता होता जो हम आज जानते हैं, तो क्या वह सभी बीमारियों को खत्म करने की संभावना के बारे में इतना आशावादी होता।

तो यह मूल रूप से बेंथम और मिल द्वारा विकसित उपयोगितावादी सिद्धांत है। प्रत्येक व्यक्ति को हर समय इस तरह से कार्य करना चाहिए कि उसके कार्यों से प्रभावित होने वाले सभी लोगों को अधिकतम आनंद मिले। यहाँ मूल विचार यही है।

और अगर हर कोई ऐसा करे, तो मनुष्य इस दुनिया में जितना खुश हो सकता है, उतना खुश होगा। यह एक अत्यधिक प्रभावशाली, शायद सबसे लोकप्रिय, दार्शनिक नैतिक सिद्धांत बना हुआ है। तो इस सिद्धांत में क्या समस्याएँ हैं? उपयोगितावाद के खिलाफ़ कई बड़ी आलोचनाएँ की गई हैं।

इनमें से एक समस्या है आवेदन की। हम निश्चित रूप से कैसे जान सकते हैं कि किसी दिए गए कार्य के परिणाम क्या होंगे? अगर मैं कोई कार्य करने का फैसला करता हूँ, तो इसका लोगों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसके परिणामस्वरूप लोगों को किस हद तक खुशी या दर्द का अनुभव होगा? समस्या यह है कि मनुष्य होने के नाते, हम सर्वज्ञ नहीं हैं, है न? हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि चीज़ें कैसे होंगी। यहाँ तक कि कई मामलों में, जब हम सोचते हैं कि परिणाम काफी हद तक पूर्वानुमानित है, तो हम गलत साबित होते हैं।

ओह, मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। अगर मुझे पता होता कि ऐसा होने वाला है, तो मैं ऐसा नहीं करता। हमने ऐसा कितनी बार कहा है? अगर मुझे पता होता।

इसलिए न केवल हम भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर सकते, बल्कि हमें वर्तमान और अतीत के बारे में बहुत सीमित जानकारी है। लेकिन उपयोगितावाद हमारी इस क्षमता पर निर्भर करता है कि हम अब तक जो अनुभव कर चुके हैं, उसके आधार पर यह अनुमान लगा सकें कि किसी दिए गए कार्य के परिणाम क्या होंगे। अब, मिल इसके जवाब में कहते हैं कि हमने पिछले अनुभव से इतना कुछ सीखा है कि, अधिकांश भाग के लिए, हम भविष्यवाणी कर सकते हैं कि किसी विशेष विकल्प के संबंध में परिणाम क्या होंगे।

खैर, यह सच हो सकता है, लेकिन फिर से, जैसा कि हम सभी ने अनुभव किया है और इस विशेष स्थिति के बारे में हमारी समझ की सीमाओं के कारण, हमारी भविष्यवाणी करने की क्षमता बहुत सीमित है, और वे गलत हो सकती हैं। इसलिए भविष्य या दूरदर्शी होना कई बार बहुत मुश्किल

होता है, खासकर जब यह विवादास्पद मुद्दों से संबंधित हो। इसलिए आवेदन के साथ यही समस्या है।

दूसरी समस्या न्याय की समस्या है। इसलिए, उपयोगितावाद दूरदृष्टि पर निर्भर करता है, और यह मुश्किल है। यह अनुप्रयोग की समस्या है।

न्याय की समस्या इसलिए होती है क्योंकि उपयोगितावाद केवल भविष्योन्मुखी है और क्योंकि यह केवल भविष्योन्मुखी है, इसलिए यह एक परिणामवादी प्रकार का सिद्धांत है। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो कार्यों के परिणामों के आधार पर सही और गलत का न्याय करता है। क्योंकि यह केवल भविष्योन्मुखी है, इसलिए यह वास्तव में अन्याय की समस्याओं का सामना करता है, इस अर्थ में कि ऐसा लगता है कि यह अन्यायपूर्ण कार्यों और नीतियों की अनुमति दे सकता है जिन्हें स्पष्ट रूप से उचित ठहराया जा सकता है, कम से कम स्थानीय स्तर पर, क्योंकि ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जहाँ अन्याय दर्द से ज़्यादा खुशी पैदा करता है।

तो, यह उपयोगितावादी सिद्धांत की एक क्लासिक आलोचना है जो कुछ परिस्थितियों में दासता को उचित ठहरा सकती है। इसलिए, जब मैं इस मुद्दे पर किसी विशेष कक्षा में पढ़ा रहा होता हूँ, मान लीजिए, 30 छात्रों की, तो मैं कभी-कभी पूछता हूँ कि क्या कोई इस सप्ताह या अगले दो सप्ताह में जन्मदिन मना रहा है, और आमतौर पर एक, शायद दो हाथ उठते हैं। 30 की कक्षा में, अच्छा, दो हाथ उठते हैं, और यह जो है, और यह जेन है, और मैंने उन्हें अपने हाथ उठाने के लिए जो किया है वह यह है कि मैंने बहुत ही यादृच्छिक तरीके से हमारे दासों का चयन किया है।

जब उनका जन्मदिन होता है तो यह बहुत ही यादृच्छिक होता है, और वे 30 लोगों के इस समुदाय में हमारे गुलाम बन जाते हैं, और वे सारा खाना बनाते हैं, वे सारे कपड़े धोते हैं, वे सुनिश्चित करते हैं कि हमारी कारें ठीक से काम कर रही हैं, आप जानते हैं, सुनिश्चित करें कि हमारी प्रत्येक कार में तेल बदला जाता है, वे हमारे परिसर में प्रकाश बल्ब बदलने आदि के मामले में विभिन्न मुद्दों का ध्यान रखते हैं। यही वे करने जा रहे हैं, हर दिन 10 घंटे, और हम उन्हें रविवार दोपहर को आराम करने देंगे, दोपहर के भोजन से रात के खाने के समय तक; यह उनके लिए लगातार काम से थोड़ी राहत होगी। लेकिन हम यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें पर्याप्त भोजन मिले, उनके पास अच्छे सोने के कमरे हों ताकि ऐसा न हो कि वे पूरे दिन दर्द में रहें, वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं, लेकिन आप जानते हैं कि हममें से बाकी लोग कड़ी मेहनत कर रहे हैं, यह सिर्फ इतना है कि उन्हें हमारे लिए काम करने के लिए नियुक्त किया गया है।

तो, वे हमारे सेवक हैं, और यही बात उन्हें गुलाम बनाती है। अब, क्या इससे इस समुदाय में दर्द की तुलना में ज़्यादा आनंद पैदा होगा? खैर, कई लोग तर्क देंगे कि वास्तव में, हाँ, क्योंकि अगर हम किसी तरह का आनंद-दर्द कैलकुलस करें, तो हम सभी के लिए समग्र आनंद मूल्य में सुधार होगा। यार, अगर मुझे अपने कपड़े धोने की चिंता न करनी पड़े, तो यह बहुत बढ़िया होगा।

मुझे अपना खाना खुद बनाने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी, यह बहुत बढ़िया होगा। मैं इसे 1 से 10 प्लस 3, 4 या 5 के पैमाने पर मानता हूँ। और अगर हमारे समुदाय के बाकी सभी लोग, बाकी 28 लोग, यही फैसला करते हैं, तो आप जानते हैं, इस स्थिति में यह गुलामी के पक्ष में बहुत ज़्यादा

अनुकूल साबित होता है। इससे उन दो गुलामों को कितना दर्द हो रहा है? ठीक है, मान लीजिए कि यह महत्वपूर्ण है, और यह सिर्फ रोज़मर्रा की मेहनत है और एक रोमांचक निजी जीवन नहीं है।

मुझे लगता है कि वे अभी भी रात में बाहर जा सकते हैं। हम कह सकते हैं, हाँ, आप रात में खाना खाने और हमारे सभी बर्तन साफ करने के बाद सामाजिक जीवन जी सकते हैं। तो, वे इसे समझते हैं, और हम उनके साथ दयालुता से पेश आते हैं, है न? फिर से, वे कपड़े पहने हुए हैं, उन्हें अच्छा खाना मिलता है, पर्याप्त आराम मिलता है, लेकिन यह अभी भी नकारात्मक होने वाला है।

शायद यह, मान लें कि यह उनमें से प्रत्येक के लिए नकारात्मक 7, 8, 9, यहां तक कि 10 भी है। यह अभी भी हम सभी द्वारा अनुभव किए जा रहे सभी आनंद से अधिक क्षतिपूर्ति करने जा रहा है। इसलिए, इस कारण से, उपयोगितावादी, वास्तव में, उपयोगितावादियों ने वर्षों से गुलामी के बचाव में तर्क दिया है।

लेकिन अगर आप मानते हैं कि गुलामी अन्यायपूर्ण है, जैसा कि उम्मीद है कि आप मानते हैं, तो आप पहचानते हैं कि भले ही यहाँ दर्द से ज़्यादा आनंद पैदा हो, फिर भी यह समस्याग्रस्त है, है न? क्योंकि चीजें अन्यायपूर्ण हो सकती हैं और मानवाधिकारों का उल्लंघन हो सकता है, इसलिए आनंद को अधिकतम करना और दर्द को कम करना अप्रासंगिक है। लेकिन उपयोगितावाद इस पर अंधा है क्योंकि यह केवल आनंद को अधिकतम करने के बारे में है। यह केवल परिणामों के बारे में चिंतित है।

यह न्याय और अधिकारों के बारे में चिंतित नहीं है। इस सिद्धांत में न्याय और अधिकारों के विचारों के लिए कोई जगह नहीं है। यह एक और बड़ी समस्या है जिसे उपयोगितावादी सिद्धांत में उजागर किया गया है।

अधिकारों की समस्या, उस बारे में बात करते हुए, पीपिंग टॉम परिदृश्य में अच्छी तरह से चित्रित की गई है। उपयोगितावाद किसी व्यक्ति के निजता के अधिकार को पर्याप्त रूप से नहीं समझा सकता है, जिसका उल्लंघन किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो चुपके से उन्हें देखता है, मान लीजिए, उनके निजी पलों में खिड़की से। अगर पीपिंग टॉम बहुत ही चतुर है और व्यक्ति को यह पता चले बिना यह कर सकता है कि उसे देखा जा रहा है, तो पीपिंग टॉम को बहुत मज़ा आ रहा है, और जिस व्यक्ति को यहाँ पीड़ित किया जा रहा है उसे इसका पता नहीं है।

उन्हें कोई दर्द नहीं हो रहा है। इसलिए, उपयोगितावादी दृष्टिकोण से, ऐसा लगता है कि यह उचित है। लेकिन, उम्मीद है कि हममें से ज़्यादातर लोग कहेंगे कि यह अभी भी गलत है।

भले ही परिणाम ऐसे हों कि व्यक्ति यहाँ अधिक आनंद का अनुभव कर रहा हो, लेकिन यह यहाँ शामिल अधिकारों के उल्लंघन की समस्या को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह, फिर से, उपयोगितावाद की एक गंभीर सीमा को दर्शाता है क्योंकि यह केवल परिणामों, सुखों और पीड़ाओं पर ध्यान देता है। यह यहाँ न्याय से ज़्यादा अधिकारों के विचार पर पर्याप्त ध्यान नहीं देता है।

फिर, अंत में, वह है जिसे मांगों की समस्या कहा जाता है। अगर हर मामले में आनंद को अधिकतम करना और दर्द को कम करना हमेशा हमारी जिम्मेदारी है, तो नैतिक रूप से गंभीर लोगों के रूप में हम पर मांगें भारी हो जाती हैं। इसका मतलब है कि आपको और मुझे सड़क के किनारे हर उस व्यक्ति की मदद करने के लिए रुकना चाहिए जिसे कार की समस्या है।

इसका मतलब है कि आपको और मुझे सिर्फ एक निश्चित मात्रा में कपड़े और दूसरी संपत्ति का इस्तेमाल करना चाहिए जो हमारे लिए एक सभ्य जीवन जीने के लिए ज़रूरी है। हमें बाकी को गरीबों को दे देना चाहिए। हमें अपनी खर्च करने लायक आय गरीबों को देनी चाहिए।

किसी भी दिन हमारा सारा खाली समय आराम में नहीं बिताना चाहिए, जब हम आनंद को अधिकतम कर सकते हैं और दूसरे लोगों के दर्द को कम कर सकते हैं। इसका मतलब है कि हमें खुद को किसी संगीत वाद्ययंत्र पर प्रशिक्षित नहीं करना चाहिए। उन सैकड़ों, हजारों घंटों के बारे में सोचें जो एक व्यक्ति द्वारा खर्च किए जाते हैं जो एक पियानोवादक या सेलो वादक के रूप में शास्त्रीय रूप से प्रशिक्षित हो रहा है, जिसे सूप किचन में काम करने या किसी तरह से गरीबों की मदद करने में खर्च किया जा सकता था।

एक गंभीर एथलेटिक प्रतिभा या एक कलात्मक प्रतिभा विकसित करना गैर-जिम्मेदाराना हो जाता है। यह उपयोगितावाद के लिए एक समस्या है क्योंकि हम में से अधिकांश लोग, उम्मीद है, कहेंगे कि एक अच्छा संगीतकार या एक अच्छा एथलीट बनने के लिए प्रशिक्षण लेना नैतिक रूप से उचित बात है, भले ही वे चीजें मानव जीवन और अस्तित्व के लिए आवश्यक न हों। उपयोगितावादी कम से कम यह दर्शाता है कि वे चीजें जिम्मेदार नहीं होंगी क्योंकि वे आनंद को बढ़ावा देने और दर्द को कम करने की हमारी क्षमता को अधिकतम नहीं कर रही हैं।

क्योंकि यह बहुत अनुचित है, इसलिए इसे कई विद्वानों ने उपयोगितावाद की एक गंभीर समस्या के रूप में पहचाना है। यहाँ समस्या, जो एक तरह की मूल कठिनाई है, वह यह है कि उपयोगितावाद के साथ इस निहितार्थ की ओर ले जाने वाली कोई चीज़ है। यह अनिवार्य कार्यों और अतिरिक्त कार्यों के बीच पर्याप्त रूप से अंतर नहीं करता है।

यह उन कामों के बीच का अंतर है जिन्हें करना हमारा कर्तव्य है और दूसरी ओर, वे काम जो अच्छे हैं लेकिन अनिवार्य नहीं हैं। वे कर्तव्य की पुकार से ऊपर और परे हैं। यही अतिरेकपूर्ण कार्य हैं।

वे कर्तव्य की पुकार से ऊपर और परे हैं। उपयोगितावाद उस भेद को पर्याप्त रूप से नहीं दर्शाता है, और यही बात मांगों की इस समस्या की ओर ले जाती है। तो, ये शास्त्रीय उपयोगितावाद की चार प्रमुख समस्याएं हैं।

उपयोगितावाद का एक और संस्करण, जिसे नियम उपयोगितावाद के रूप में जाना जाता है, इन समस्याओं को दूर करने का लक्ष्य रखता है और जब आवेदन की समस्या, न्याय की समस्या और शायद अधिकारों की समस्या की बात आती है तो ऐसा कर सकता है। नियम उपयोगितावादी जो दृष्टिकोण पेश करता है वह यह है कि हमें व्यक्तिगत कार्यों पर ध्यान केंद्रित करके अपने नैतिक

निर्णय नहीं लेने चाहिए। मान लीजिए कि उपयोगिता के सिद्धांत के साथ व्यक्तिगत कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए।

इसके बजाय, आइए जीवन जीने के नियमों और सामान्य नियमों का मूल्यांकन करें और उन नियमों का मूल्यांकन इस आधार पर करें कि क्या उनका पालन करने पर वे दर्द की तुलना में अधिक आनंद प्रदान करेंगे। यही नियम उपयोगितावादी विचार है। उन नियमों के अनुसार जिन्हें जिनका पालन करने पर अधिकतम लोगों को सबसे अधिक आनंद प्राप्त होगा।

अब, यह एक ऐसा सिद्धांत है जिसका वास्तव में बचाव किया गया है। इस सिद्धांत के विभिन्न संस्करणों का बचाव किया गया है, जिनमें से कई सामाजिक अनुबंध नैतिकता की सामान्य श्रेणी में आते हैं। और हम बाद में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के बारे में बात करेंगे।

सामाजिक अनुबंधवादी कहते हैं कि हमें पूरे समाज को इस तरह से स्थापित करना चाहिए कि कुछ बुनियादी नियम हों जिनका हम सभी को पालन करना चाहिए, और हम केवल उन नियमों का चयन करें जिनका पालन करने पर समाज में अधिकतम आनंद मिलेगा। हम ऐसे समाज में रहते हैं। हमारे पास एक सामाजिक अनुबंध है, और इसे अमेरिकी संविधान कहा जाता है।

हमारे पास अधिकारों का एक विधेयक है, और उसमें सभी तरह के नियम हैं जो हमारे संस्थापक पिताओं ने तय किए थे कि अगर हम अपने समाज को उसी के अनुसार संगठित करेंगे, तो यह हमें व्यापक खुशी पाने का सबसे अच्छा मौका देगा। तो यह नियम उपयोगितावाद का एक प्रकार का अनुप्रयोग है। लेकिन इसके अन्य रूप भी हैं।

लेकिन बाद में, एक अलग व्याख्यान में, हम सामाजिक अनुबंध नैतिकता के बारे में बात करेंगे। लेकिन उपयोगितावाद के लिए बस इतना ही काफी है।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3 है, उपयोगितावाद।